Faizane Shabaan (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 187
Weekly Booklet : 187

फ़ैज़ाने शा'बान

सफ़हात 20

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने शा'बान**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने शा'बान

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला **''फ़ैज़ाने शा'बान''** पढ़ या सुन ले उसे अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे महीने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में ख़ूब इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे।
اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अहले बैते अत़्हार के रोशन चराग़, ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जो कोई शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में रोज़ाना सात सो (700) मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** करीम कुछ फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो इस दुरूदे पाक को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचाएंगे, इस से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक ख़ुश होगी फिर **अल्लाह** पाक उन फ़िरिश्तों को हुक्म देगा कि इस दुरूद पढ़ने वाले के लिये क़ियामत तक दुआए मग़्फ़िरत करते रहो।

(القول البدیع، ص395)

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत
प्यारे पढ़ूं न क्यूंकर तुम पर सलाम हर दम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि इस माहे मुबारक में प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ूब दुरूदे पाक पढ़ें कि शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म दुरूदे पाक पढ़ने का महीना है जैसा कि शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और इन्ही के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिहाबुद्दीन अह़मद बिन ह़िजाज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : बेशक शा'बान नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने का महीना है कि आयते दुरूद इसी महीने में नाज़िल हुई। (مواهب اللدنية،2/506۔تحفة الاخوان،ص53)

आयते दुरूद येह है :

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝۵۶

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

वोह सलामत रहा क़ियामत में — पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर — मेरी जानिब से लाख बार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर — भेज ऐ मेरे किर्दिगार सलाम
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

चांद देखना वाजिब है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म इस्लामी साल का ''आठवां महीना'' है जो रजबुल मुरज्जब और रमज़ानुल मुबारक के दरमियान में है। येह उन पांच महीनों में से पहला महीना है जिन का चांद देखना वाजिबे किफ़ाया है, पांच महीने येह हैं : (1) शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

(2) रमज़ानुल मुबारक (3) शव्वालुल मुकर्रम (4) ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम और (5) ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम।

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के नाम की ह़िक्मतें

(1) शा'बान, शि'बुन से बना है जिस के मा'ना हैं घाटी। चूंकि इस महीने में ख़ैरो बरकत का उ़मूमी नुज़ूल होता है, इस लिये इसे शा'बान कहा जाता है, जिस त़रह़ घाटी पहाड़ का रास्ता होती है इसी त़रह़ येह महीना ख़ैरो बरकत का रास्ता है। (مکاشفۃ القلوب،303)

(2) **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اِنَّمَا سُمِّيَ شَعْبَانُ لِاَنَّهٗ يَنْشَعِبُ فِيْهِ خَيْرٌ كَثِيْرٌ لِّلصَّائِمِ فِيْهِ حَتّٰى يَدْخُلَ الْجَنَّة, या'नी इस महीने को "शा'बान" इस लिये कहा जाता है कि इस में रोज़ा रखने वाले के लिये बहुत सी भलाइयां (शाख़ों की त़रह़) फूटती हैं, यहां तक कि वोह जन्नत में जा पहुंचता है। (التدوین فی اخبار قزوین،153/1)

ह़ज़रते इमाम राफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक का मत़लब येह है कि माहे शा'बान में मुसल्मान ज़िक्रो अज़्कार, नेकियों और क़ुरआने पाक की तिलावत की त़रफ़ माइल हो जाते हैं और रमज़ानुल मुबारक के लिये तय्यारी करते हैं। (التدوین فی اخبار قزوین،153/1) और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का हुक्म नाज़िल हुवा। (حدائق الاولیاء،592/2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

माहे शा'बान में इस्तिक़्बाले रमज़ान की तय्यारी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शा'बान का महीना चूंकि रमज़ान से पहले आता है लिहाज़ा जिस त़रह़ माहे रमज़ान में रोज़े और तिलावते

कुरआन का हुक्म है इसी त़रह़ माहे शा'बान में भी इस की बड़ी अहम्मिय्यत है कि रोज़े रखे जाएं और तिलावते कुरआन की जाए ताकि इस्तिक़्बाले रमज़ान की तय्यारी हो जाए और नफ़्स को इ़बादात की आ़दत हो जाए।

सह़ाबए किराम का अन्दाज़े मुबारक

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : शा'बान का महीना आता तो मुसल्मान कुरआने करीम की तिलावत में मश्ग़ूल हो जाते, अपने मालों की ज़कात अदा कर देते ताकि कमज़ोरों और मिस्कीनों को भी रमज़ान के रोज़ों की त़ाक़त मिले। (ماذافی شعبان،ص44)

तिलावते कुरआन का महीना

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सलमा बिन कुहैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : माहे शा'बान को तिलावते कुरआन करने वालों का महीना कहा जाता था। ह़ज़रते ह़बीब बिन अबू साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ शा'बान के आने पर फ़रमाते : येह क़ारियों का महीना है। ह़ज़रते अ़म्र बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की आमद पर अपनी दुकान बन्द कर देते और तिलावते कुरआने करीम के लिये फ़ारिग़ हो जाते। (ماذافی شعبان،ص44)

बराअत दे अ़ज़ाबे क़ब्र से नारे जहन्नम से
महे शा'बान के सदक़े में कर फ़ज़्लो करम मौला

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐ ग़ाफ़िल !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم तो इस मुबारक महीने को इ़बादत में गुज़ारें, तिलावत करें, नेकियों का एहतिमाम

करें और हम ग़फ़्लत की नींद सोते ही रहें ऐसे ग़ाफ़िलों के बारे में कहा गया है : ऐ मुबारक वक़्तों में कोताही करने वाले ! इन वक़्तों को ज़ाएअ़ करने वाले ! और इन्हें बुरे आ'माल से आलूदा करने वाले ! तू ने कितने बुरे काम इन मुबारक वक़्तों के ह़वाले किये ! (चन्द अ़रबी अश्आ़र का तरजमा)

(1) रजब चला गया और तू ने उस में कोई नेकी नहीं की और अब येह बरकत वाला माहे शा'बान है। (2) ऐ शा'बान की अ़ज़्मत से बे ख़बर रह कर इन वक़्तों को ज़ाएअ़ करने वाले ! होश में आ और तबाही से डर। (3) बहुत जल्द सब लज़्ज़तें तुझ से छीन ली जाएंगी और मौत तुझे तेरे घर से ज़बर दस्ती निकाल देगी। (4) सच्ची और ख़ुलूस भरी तौबा के ज़रीए़ जिस क़दर गुनाहों का इ़लाज कर सकता है कर ले। (5) और जहन्नम से सलामती को ही अपना मक़्सद बना ले, बेहतरीन मुजरिम वोह है जो अपने जुर्मों का इ़लाज कर ले।

मुख़्तसर सी ज़िन्दगी है भाइयो ! नेकियां कीजे, न ग़फ़्लत कीजिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में क्या है ?

ह़ज़रते अबू मा'मर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : माहे शा'बान ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे दो अ़ज़्मत वाले महीनों (रजब और रमज़ानुल मुबारक) के दरमियान रखा है तो तू ने मेरी क्या फ़ज़ीलत रखी ? **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने तुझ में क़ुरआने पाक की तिलावत रख दी। (الامالی المطلقة، ص125)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में ख़ूब नेकियां कीजिये, ख़ूब ज़िक्रो अज़्कार, दुरूदे पाक और तिलावते क़ुरआने करीम

कर के इस अ़ज़मत वाले महीने की ख़ूब ता'ज़ीम करें। इस अ़ज़मत वाले महीने की अहम्मिय्यत के लिये इतना ही काफ़ी है कि इस के बारे में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : شَهْرُ شَعْبَانَ شَهْرِیْ या'नी माहे शा'बान मेरा महीना है। (مسند الفردوس، 2/275 حدیث:3276)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसे रमज़ान के रोज़ों की तय्यारी फ़रमाते ऐसे ही शा'बान के रोज़ों की भी तय्यारी फ़रमाते। (النور فی فضائل الایام والشهور، ص173) नीज़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता'ज़ीमे रमज़ान के लिये शा'बान के रोज़ों को सब से अफ़्ज़ल रोज़े क़रार दिया, जैसा कि

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सब से अफ़्ज़ल रोज़ों के बारे में पूछा गया तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रमज़ान की ता'ज़ीम के लिये शा'बान के रोज़े। (ترمذی، 2/145، حدیث:663)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ों की आ़दत

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़ों की एक ह़िक्मत येह भी बयान की गई है कि शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़ों से रमज़ान के रोज़ों की मश्क़ (प्रेक्टिस) हो जाए ताकि रमज़ान के रोज़ों में मशक़्क़त और तक्लीफ़ महसूस न हो बल्कि तब तक बन्दे को रोज़ों की आ़दत हो चुकी हो और रमज़ान से पहले शा'बान में रोज़ों की मिठास और लज़्ज़त का एह़सास हो

चुका हो, लिहाज़ा जब माहे रमज़ान आए तो बन्दा चुस्ती के साथ रमज़ान के रोज़े रखने लगे। (لطائف المعارف ص155)

शा'बान के रोज़ों से महब्बत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को माहे शा'बान में रोज़े रखना तमाम महीनों से ज़ियादा पसन्दीदा था कि इस में रोज़े रखा करते फिर इसे रमज़ान से मिला देते। (ابوداود، 2/476، حدیث:2431)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ही से रिवायत है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पूरे शा'बान के रोज़े रखा करते थे और फ़रमाते : अपनी इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** पाक उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ। (بخاری، 1/648، حدیث:1970 مختصرا)

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : मुराद येह है कि शा'बान में अक्सर दिनों में रोज़ा रखते थे इसे तग़्लीबन (या'नी ग़लबे और ज़ियादत के लिहाज़ से) कुल (या'नी सारे महीने के रोज़े रखने) से ता'बीर कर दिया। जैसे कहते हैं : ''फ़ुलां ने पूरी रात इ़बादत की'' जब कि उस ने रात में खाना भी खाया हो और ज़रूरिय्यात से फ़राग़त भी की हो, यहां तग़्लीबन अक्सर को ''कुल'' कह दिया। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि शा'बान में जिसे क़ुव्वत हो वोह ज़ियादा से ज़ियादा रोज़े रखे।

अलबत्ता जो कमज़ोर हो वोह रोज़ा न रखे क्यूं कि इस से रमज़ान के रोज़ों पर असर पड़ेगा, येही महमूल (या'नी मुराद व मक़्सद) है उन अहादीस का जिन में फ़रमाया गया कि निस्फ़ (या'नी आधे) शा'बान के बा'द रोज़ा न रखो। (नुज़्हतुल क़ारी, 3/377, 380)

अगर कोई पूरे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े रखना चाहे तो उस को मुमानअ़त भी नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दा'वते इस्लामी के कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनों में रजबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म दोनों महीनों के रोज़े रखने की तरकीब होती है और मुसल्सल रोज़े रखते हुए येह हज़रात रमज़ानुल मुबारक से मिल जाते हैं।

शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा

हज़रते अ़ल्लामा शाह फ़ज़्ले रसूल बदायूनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े इस लिये रखे कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द थे, उसे हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी। **(المتعقد المنتقد، ص129)**

फ़रमाएंगे जिस वक़्त ग़ुलामों की शफ़ाअ़त मैं भी हूं ग़ुलाम आप का मुझ को न भुलाना
फ़रमा के शफ़ाअ़त मेरी ऐ शाफ़ेए महशर ! दोज़ख़ से बचा कर मुझे जन्नत में बसाना

हुज़ूर को शा'बान के रोज़े पसन्द होने की वज्ह

जन्नती सहाबी, हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं देखता हूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस त़रह़ शा'बान के रोज़े रखते हैं इस त़रह़ किसी और महीने में रोज़े नहीं

रखते। फ़रमाया : रजब और रमज़ान के बीच में येह महीना है, लोग इस से ग़ाफ़िल हैं। इस में लोगों के आ'माल **अल्लाह** करीम की बारगाह में पेश किये जाते हैं और मुझे येह महबूब (या'नी पसन्द) है कि मेरा अ़मल इस ह़ाल में उठाया जाए कि मैं रोज़ादार होउं। (نسائی،ص387حدیث:2354)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह अ़मल यक़ीनन हम ग़ुलामों की ता'लीम के लिये था जभी तो फ़रमाया कि "रजब और रमज़ान के बीच में येह महीना है, लोग इस से ग़ाफ़िल हैं।" लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाएं, नेकियों में इज़ाफ़ा करें और आख़िरत को बेहतर बनाने की फ़िक्र करें नीज़ इस अच्छी निय्यत से माहे शा'बान के रोज़े रखने में दिलचस्पी लें कि इस महीने में जब हमारा आ'माल नामा हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश किया जाए तो ऐ काश ! हम भी रोज़ादार हों।

यूं मेरा दुन्या से सफ़र हो उन की चौखट मेरा सर हो
पेशे नज़र हो उन का जल्वा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"शबे बराअत"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत बड़ी बा बरकत रात है। इस रात **अल्लाह** पाक की ख़ूब रह़मतों, बरकतों का नुज़ूल होता है। **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस रात ख़ास तौ़र पर अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई की दुआ़ मांगनी

चाहिये क्यूं कि इस रात दुआएं क़बूल होती हैं, **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पांच रातों के बारे में फ़रमाया कि इन में दुआ रद नहीं की जाती जिन में से एक शा'बान की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत भी) है।

(جامع صغیر، ص241، حدیث:3952 مختصرا)

शबे बराअत के 15 नाम

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : शबे बराअत के चार नाम हैं : لَيْلَةُ الْمُبَارَكَة (बरकत वाली रात), لَيْلَةُ الْبَرَاءَة (नजात वाली रात), لَيْلَةُ الصَّك (दस्तावेज़ वाली रात), لَيْلَةُ الرَّحْمَة (रह़मत वाली रात)। मज़ीद फ़रमाते हैं : इसे لَيْلَةُ الْبَرَاءَة और لَيْلَةُ الصَّك (नजात व दस्तावेज़ वाली रात) इस लिये कहते हैं कि जब ताजिर मालिक से उस का अनाज वुसूल कर लेता है तो उस के लिये बराअत नामा लिख देता है। इसी त़रह़ **अल्लाह** पाक इस रात अपने मोमिन बन्दों के लिये बराअत नामा लिख देता है। (التبیان فی بیان مافی لیلۃ النصف من شعبان، 41/3)

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद बिन अ़लवी मालिकी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने मज़ीद चन्द नाम भी ज़िक्र फ़रमाए हैं : لَيْلَةُ الْقِسْمَة، لَيْلَةُ التَّكْفِيْر क्यूं कि इस रात गुनाह मिटाए जाते हैं, لَيْلَةُ الْاِجَابَة क्यूं कि इस रात दुआ क़बूल होती है, لَيْلَةُ الْحَيَاة، لَيْلَةُ عِيْدِ الْمَلَائِكَة (या'नी फ़िरिश्तों की शबे ईद), لَيْلَةُ الشَّفَاعَة، لَيْلَةُ الْجَائِزَة، لَيْلَةُ الرُّجْحَان، لَيْلَةُ التَّعْظِيْم، لَيْلَةُ الْقَدْر، لَيْلَةُ الْغُفْرَان۔

(ماذا فی شعبان، ص72 75 ملتقطا)

रह़मत के तीन सो (300) दरवाज़े

जन्नती सह़ाबी, ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे पास ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام शबे बराअत में ह़ाज़िर हुए और मुझ से कहा कि उठ कर नमाज़ अदा फ़रमाइये और अपना सर और हाथ मुबारक आस्मान की त़रफ़ उठाइये। मैं ने पूछा : ऐ जिब्रील ! येह कैसी रात है ? अ़र्ज़ की : **या मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह वोह रात है कि जिस में आस्मान और रह़मत के 300 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, **अल्लाह** पाक के साथ शरीक ठहराने वालों, आपस में बुग़्ज़ो कीना रखने वालों, शराबियों और बदकारों के इ़लावा सब की मग़्फ़िरत कर दी जाती है, इन लोगों की उस वक़्त तक मग़्फ़िरत नहीं होगी जब तक कि सच्ची तौबा न कर लें। अलबत्ता शराब के आ़दी के लिये रह़मत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खुला छोड़ दिया जाता है यहां तक कि तौबा कर ले, जब वोह तौबा कर लेता है तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है, इसी त़रह़ कीना रखने वाले के लिये भी रह़मत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खुला छोड़ दिया जाता है यहां तक कि वोह अपने साथी (या'नी जिस से कीना रखता है) से बातचीत कर ले, जब वोह उस से बातचीत कर लेता है तो उस की भी मग़्फ़िरत कर दी जाती है। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! अगर वोह अपने साथी से कलाम न करे यहां तक कि शबे बराअत गुज़र जाए तो.....? ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : अगर वोह इसी ह़ालत पर बर क़रार रहा यहां तक कि (नज़्अ़ का आ़लम त़ारी होने के सबब) उस के सीने में सांस अटक्ने लग जाए तब भी उस के लिये दरवाज़ए रह़मत

खुला रहता है, अगर वोह (मौत से पहले कीनए मुस्लिम से) तौबा कर ले तो उस की तौबा मक़्बूल है। फिर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नतुल बक़ीअ़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए और सज्दे में जा कर इन अल्फ़ाज़ में दुआ मांगी : اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْكَ جَلَّ ثَنَاءُكَ لَا اَبْلُغُ الثَّنَاءَ عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ (या'नी ऐ **अल्लाह** पाक !) मैं तेरे अ़ज़ाब से तेरी मुआ़फ़ी, तेरी नाराज़ी से तेरी रिज़ा और तुझ से तेरी पनाह त़लब करता हूं, तेरी ता'रीफ़ बुलन्द है, मैं तेरी ता'रीफ़ का ह़क़ अदा नहीं कर सकता, तेरी ह़क़ीक़ी शान वोही है जो तू ने ख़ुद बयान फ़रमाई।

रात के चौथे पहर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और अ़र्ज़ की : **या मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाइये, आप ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया तो देखा कि रह़मत के दरवाज़े खुले हुए हैं और हर दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता आवाज़ दे रहा है, (पहले दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता यूं पुकार रहा है कि) मुबारक हो उसे जो इस रात इ़बादत करे, दूसरे दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता यूं पुकार रहा है कि मुबारक हो उसे जो इस रात में सज्दा करे, तीसरे दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता पुकार रहा है कि मुबारक हो उसे जो इस रात में रुकूअ़ करे, चौथे दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता सदा लगा रहा है कि मुबारक हो उसे जो इस रात में अपने रब्बे करीम से दुआ मांगे, पांचवें दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता यूं आवाज़ लगा रहा है कि मुबारक हो उसे जो इस रात अपने रब्बे करीम से दुआ करने में मश्ग़ूल हो, छटे दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता पुकार रहा है कि इस रात में मुसल्मानों को मुबारक हो, सातवें दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता पुकार रहा है कि **अल्लाह** पाक को एक मानने वालों को मुबारक

हो, आठवें दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता पुकार रहा है कि है कोई तौबा करने वाला कि उस की तौबा क़बूल की जाए ? नवें दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता सदा लगा रहा है कि है कोई मग़्फ़िरत त़लब करने वाला कि उस की मग़्फ़िरत कर दी जाए ? और दसवें दरवाज़े पर भी एक फ़िरिश्ता निदा दे रहा है कि है कोई दुआ़ करने वाला कि उस की दुआ़ क़बूल कर ली जाए ? फिर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! रह़मत के येह दरवाज़े कब तक खुले रहते हैं ? अ़र्ज़ की : रात की इब्तिदा से त़लूए़ फ़ज्र तक। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस रात बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों की मग़्फ़िरत की जाती है, इसी रात लोगों के साल भर के आ'माल (आस्मानों की जानिब) बुलन्द किये जाते हैं और इसी रात रिज़्क़ तक़्सीम किये जाते हैं। (تاریخ ابن عساکر 51/72-73)

रह़मत का है दरवाज़ा खुला मांग अरे मांग देता है करम उन का सदा मांग अरे मांग
भर जाएगा कश्कोल मुरादों से तेरा भी बन कर मेरे आक़ा का गदा मांग अरे मांग
सरकार से सरकार को मांगूंगा नियाज़ी सरकार ने जिस वक़्त कहा मांग अरे मांग

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़िरिश्तों की ईद

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : कहा गया है कि आस्मान के फ़िरिश्तों के लिये दो रातें ईद और ख़ुशी की हैं जैसे दुन्या में मुसल्मानों के लिये दो ईद के दिन हैं, (1) पन्दरह शा'बान की रात और (2) लैलतुल क़द्र।

साल भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा

हज़रते इमाम तक़िय्युद्दीन सुबकी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : येह रात साल भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती है, शबे जुमुआ़ पूरे हफ़्ते के गुनाहों का कफ़्फ़ारा और लैलतुल क़द्र उ़म्र भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है या'नी इन रातों में **अल्लाह** पाक की इ़बादत करना और यादे इलाही में सारी रात जाग कर गुज़ार देना गुनाहों के कफ़्फ़ारे का सबब होता है इसी लिये इन रातों को कफ़्फ़ारे की रात भी कहा जाता है। (مكاشفة القلوب،ص303)

जन्नत संवारी जाती है

हज़रते का'बुल अह़बार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक शा'बान की पन्दरहवीं रात ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को जन्नत की त़रफ़ भेजता है, वोह जन्नत को आरास्ता होने का हुक्म देते हैं और फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने तेरी इस रात में आस्मानों के सितारों, दुन्यावी दिनों और रातों, दरख़्तों के पत्तों, पहाड़ों के वज़्न और रेत के ज़र्रों के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दिया है। (ماذا فى شعبان،ص87)

सफ़े मातम उठे ख़ाली हो ज़िन्दां टूटें ज़न्जीरें गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

शबे बराअत और प्यारे नबी की इ़बादात

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे

बराअत में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इबादत फ़रमाया करते थे। जैसा कि

हज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो कर और बैठ कर मुसल्सल नमाज़ पढ़ते रहे यहां तक कि सुब्ह हो गई, सुब्ह तक हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दम सूज गए थे चुनान्चे मैं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम मुबारक दबाने लगी। (الدعوات الکبیر، 145/2، حدیث:530 ماخوذا)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! कभी ऐसा भी हुवा कि अपनी उम्मत से प्यार करने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शबे बराअत में क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए और वहां जा कर अपने रब से अहले क़ुबूर के लिये दुआएं मांगीं, जैसा कि हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पन्दरह शा'बान की रात जन्नतुल बक़ीअ़ में इस हाल में पाया कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुसल्मान मर्दों, औरतों और शहीदों के लिये दुआए मग़्फ़िरत फ़रमा रहे थे।

(شعب الایمان، 384/3، حدیث:3837 ماخوذا)

सद शुक्र ख़ुदाया तू ने दिया, है रह़मत वाला वोह आक़ा
जो उम्मत के रन्जो ग़म में, रातों को अश्क बहाता रहे

(वसाइले बख़्शिश, स. 475)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि रह़मतो मग़्फ़िरत वाली इस मुबारक रात को इबादत करते हुए ज़िक्रो दुआ में गुज़ारें, अपनी और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ के साथ साथ क़ब्रिस्तान जा कर अपने मर्हूमीन के लिये भी दुआए मग़्फ़िरत करें।

शबे बराअत में क़ब्रिस्तान जाना

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था अब ज़ियारते क़ुबूर किया करो कि बेशक येह दुन्या से बे रग़बत करती है और आख़िरत की याद दिलाती है । (ابن ماجه، 252/2، حديث:1571)

मा'लूम हुवा कि वक़्तन फ़ वक़्तन क़ब्रिस्तान जाते रहना चाहिये ताकि क़ब्रों को देख कर हमारे दिल में फ़िक्रे आख़िरत पैदा हो ।

अपने मर्हूमीन को भी याद रखिये ।

जन्नती इब्ने जन्नती, सहाबी इब्ने सहाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि जब शबे बराअत आती है तो (मोमिन) मुर्दे अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने घरों के दरवाज़ों पर खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : हम पर सदक़ा कर के रह़्म करो अगर्चे रोटी का एक लुक़्मा ही हो, क्यूं कि हम इस के ज़रूरत मन्द हैं । अगर वोह (सदक़ा की हुई) कोई चीज़ नहीं पाते तो ह़सरत से वापस लौट जाते हैं ।

(फ़तावा रज़विय्या, 14/694, الدرر الحسان فى البعث و نعيم الجنان، ص33)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

नवासए रसूल का शबे बराअत में मा'मूल

जन्नती इब्ने जन्नती, नवासए रसूल ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه शबे बराअत के तीन ह़िस्से फ़रमाते । एक तिहाई ह़िस्से में

अल्लाह पाक के इस फ़रमान ''يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।)'' पर अ़मल करते हुए अपने नानाजान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते, एक तिहाई हिस्से में तौबा व इस्तिग़फ़ार करते और आख़िरी तिहाई हिस्से में **अल्लाह** पाक के फ़रमान पर अ़मल करते हुए रुकूअ़ व सुजूद फ़रमाते। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने अपने अब्बूजान (ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) से सुना है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो निस्फ़ शा'बान की रात (या'नी शबे बराअत) को ज़िन्दा करेगा (या'नी उस रात इ़बादत करेगा) वोह मुक़र्रबीन में लिखा जाएगा। (القول البدیع، ص396)

शबे बराअत में इ़बादत करना मुस्तह़ब है

ह़ज़रते ख़ालिद बिन मि'दान, ह़ज़रते लुक़्मान बिन आ़मिर और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) को अच्छा लिबास पहनते, ख़ुश्बू सुल्गाते, सुरमा लगाते और रात मस्जिद में जम्अ़ हो कर इ़बादत किया करते थे। ह़ज़रते इस्ह़ाक़ बिन राहुवैह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه भी इसी बात की ताईद करते और इस रात मस्जिदों में इकठ्ठे हो कर नफ़्ली इ़बादत करने के बारे में फ़रमाते हैं : ''येह कोई बिद्अ़त (या'नी बुरा काम) नहीं है।'' (ماذا فی شعبان، ص75) ह़ज़रते अ़ल्लामा शिहाबुद्दीन अह़मद बिन ह़िजाज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शबे बराअत में इ़बादत करना मुस्तह़ब है।

(ماذا فی شعبان، ص85۔ تحفۃ الاخوان فی قراءۃ المیعاد، ص65)

सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दुआए मग़्फ़िरत करेंगे

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शबे बराअत में सूरए दुख़ान पढ़ना मुस्तह़ब है । जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो रात में حٰمٓ الدُّخَان की तिलावत करेगा तो वोह सुब्ह़ इस ह़ाल में करेगा कि सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत कर रहे होंगे ।

(التبیان فی بیان مافی لیلۃ النصف من شعبان۔۔۔الخ، 52/3)

शबे बराअत में अस्लाफ़ की दुआ

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन से साबित है कि वोह इस रात (बतौ़रे आ़जिज़ी) येह दुआ मांगते थे : اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنَا اَشْقِيَاءَ فَامْحُهْ وَاكْتُبْنَا سُعَدَاءَ وَاِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنَا سُعَدَاءَ فَاَثْبِتْنَا فَاِنَّكَ تَمْحُوا مَا تَشَاءُ وَتُثْبِتُ وَعِنْدَكَ اُمُّ الْكِتَابِ۔

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! अगर तू ने हमें बद बख़्त लिखा है तो तू इसे मिटा दे और हमें सआ़दत मन्द लिख दे और अगर तू ने हमें सआ़दत मन्द लिखा है तो इसे साबित रख, बेशक जो तू चाहता है उसे मिटाता है और जो चाहता है साबित रखता है और तेरे ही पास उम्मुल किताब है ।

(التبیان فی بیان مافی لیلۃ النصف من شعبان۔۔۔الخ، 51/3)

शबे बराअत कैसे गुज़ारें ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस महीने की पन्दरहवीं रात जिसे

शबे बराअत कहते हैं बहुत मुबारक रात है। इस में क़ब्रिस्तान जाना, वहां फ़ातिहा पढ़ना सुन्नत है, इसी त़रह़ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िर होना भी सवाब है अगर हो सके तो चौदहवीं और पन्दरहवीं तारीख़ को रोज़े रखे। पन्दरहवीं तारीख़ को ह़ल्वा वग़ैरा बुज़ुर्गाने दीन की फ़ातिह़ा पढ़ कर सदक़ा व ख़ैरात करे और पन्दरहवीं रात को सारी रात जाग कर नफ़्ल पढ़े और इस रात को हर मुसल्मान एक दूसरे से अपने क़ुसूर मुआ़फ़ करा लें, क़र्ज़ वग़ैरा अदा करें क्यूं कि बुग़्ज़ वाले मुसल्मान की दुआ़ क़बूल नहीं होती। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर तमाम रात न जाग सके तो जिस क़दर हो सके इबादत करे और ज़ियाराते क़ुबूर करे। अगर इस रात को सात पत्ते बेरी के पानी में जोश दे कर ग़ुस्ल करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه तमाम साल जादू के असर से मह़फ़ूज़ रहेगा। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 134)

बिगड़ी क़िस्मत संवर, जाएगी हो नज़र सूए लौह़ो क़लम, ताजदारे ह़रम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	जन्नत संवारी जाती है	14
शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के नाम की ह़िक्मतें	3	नवासए रसूल का शबे बराअत में मा'मूल	16
तिलावते क़ुरआन का महीना	4	सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दुआ़ए मग़्फ़िरत करेंगे	18
शबे बराअत के 15 नाम	10		
साल भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा	14	शबे बराअत में अस्लाफ़ की दुआ़	18

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शबे बराअत भी मग़्फ़िरत से महरूम

हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने फ़रमाया : मेरे पास जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) आए और कहा : शा'बान की पंदरहवीं रात है, इस में अल्लाह पाक जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है, जितने बनी कल्ब के बकरियों के बाल हैं मगर ग़ैर मुस्लिम और अ़दावत वाले और रिश्ते काटने वाले और कपड़ा लटकाने वाले और वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता।

(شعب الایمان، ۳/۳۸۴، حدیث: ۳۸۳۷)

978-969-722-152-3
01082171

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net